विद्यालय का नाम - परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, नरौरा

कर्मचारी पहचान संख्या - 2154

वर्ग - 'क'

हिन्दी मौलिक कविता लेखन प्रतियोगिता

शीर्षक - नव-सामान्य परिदृश्य (neo-normal scenario after Covid-19)

नव आँगन है नव चौबारा, है नव गृह कोना-कोना।
मंदिर–मस्ज़िद का परिदृश्य भी, बदल गया है कोरोना ।।
मुखड़ा पूनम चाँद नहीं है, अधरों की मुस्कान नहीं है।
आधे घूँघट-पट में पराए, अपनों की पहचान नहीं है।।
सखियों का आलिंगन छूटा, लाली-गजरा-कंगन रूठा।
वन-उपवन में धमाचौकड़ी, मीत-प्रीत कर-बंधन टूटा।।
रिश्ते-नाते सभी निपट गए, मोबाइल में सभी सिमट गए।
बिन आए -जाए अपनों के, मन से मन के तार कट गए।।
बाहर कब खाना-पीना है ? बे-रंग जीवन ही जीना है।
दो गज की दूरी ने लूडो, कैरम और शतरंज छीना है।।
लेकिन बसुधा की हरियाली, धुली-धुली सी महक रही है।
जल-धारा भी निर्मल हो गई, गौरैया भी चहक रही है।।
बस और रेल है रेला नहीं है, तीज-त्योहार है मेला नहीं है।
शादी-ब्याह-सगाई में भी, किंचित ठेलम-ठेला नहीं है।।
सड़कों पर बारात नहीं है, कान-फोड़ आवाज़ नहीं है।
कोमल मन को कंपित कर दे, ऐसा कर्कश साज नहीं है।।
माना कोरोना ने हमको, पल-पल बहुत सताया है।
पर सेवा-सादगी-शुचिता का, एक नवपरिदृश्य दिखाया है।।

—oo—

नव सामान्य परिदृश्य (Neo-normal Scenario after Covid-19)

188

नव आशा

चुनौतियाँ हमें लड़ना सिखाती हैं
मुसीबतों को अवसर में बदलना सिखाती हैं।
फैले थे चारों ओर जहाँ महामारी के अँधेरे
मँडरा रहे थे गिद्ध हरपल सिर पर हमारे
देखो, सब गायब होने लगे हैं
वाह। अँधेरे को काटते तारे टिमटमाने लगे हैं।
बच्चों की हँसी, बड़ों की दुआ
रिश्तों की अहमियत, अपनों का छुआ
चहारदिवारी से निकलकर, बिखरकर
देश को सँवारने और सुधारने लगे हैं।
बढ़ रहे थे ~~कदम~~ हरदम आँखों पट्टी बाँध कर
जहाँ हो चुके थे सीमित रास्ते, पथ भटककर
कोरोना महायुद्ध से आँखें खुलने लगी हैं
नव आशाएँ सबके हृदय में जगने लगी हैं।
खेतों में फैली है हरियाली, सजने लगी है क्यारी-क्यारी
घोंसले बनाने की हो चुकी है भरपूर तैयारी
सावधान! फिर कभी न फैले यमतुल्य महामारी
मेहनत और भी ज्यादा जोर पकड़ने लगी है।

नाम - धर्मेंद्र चौधरी (शिक्षक)
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-2
कल्पक्कम, चेन्नई
आई. सी. नं. - 404
के. प. सं. - 333।

उत्कृष्ट

नव सामान्य परिदृश्य

(Neo normal Scenario after Covid-19)

आज कोरोना की पड़ रही ऐसी मार दुनिया हुई लाचार।
इतना बदलाव दिख रहा कि बेहतर हुआ आपसी व्यवहार ॥

कोरोना ने बदली जीवन की रूपरेखा जो पहले न देखा
पहले धन कमाने में थी आसक्ति परिवार से था अनदेखा
कोरोना ने सिखाया धन से बड़ा जीवन बाकी सब धोखा
करो योग रहो नीरोग तो परिवार में न हो कोई भी बीमार ॥१॥

समझ में नहीं आता कि कोरोना को दुहाई दें या धन्यवाद
घर में रहना सीख के ही सब आपस में करने लगे हैं संवाद
साथ रहकर भी दूर थे पहले, अब न दिखता कहीं विवाद
परिवार के मर्म को जाने सब, कोरोना ने किया चमत्कार ॥२॥

कोरोना ने भारतीय संस्कृति से दुनिया को दिया है जोड़,
हाय हैलो छोड़ 'नमस्तेजी' के लिए सबको दिया है मोड़
सभी वैज्ञानिक व अनुसंधाता ढूँढ रहे हैं कोरोना का तोड़
सभी हुए तंग इससे नाश हेतु मिल सब कर रहे हैं विचार ॥३॥

जब तोड़ मिलेगा कोरोना दुनिया से हो जाएगा अलविदा
तब सब आपस में सहयोगी बने रहेंगे न होंगे कभी जुदा
मानव मानवता को सीख ले तो हर सकेगा सबकी विपदा
विश्वबंधुत्व की भावना जगेगी तब स्वर्गमय बनेगा संसार ॥४॥

आज इस तालाबंदी ने गुरु-शिष्य प्रेम परंपरा को जगाया
माता-पिता, दादा-दादी, पति-पत्नी सब रिश्तों को मिलाया
कोरोना ने सबको स्वास्थ्य और परिवार का महत्त्व बताया
विषम परिस्थिति ने "निर्मोही" जो सिखाया याद रहे उम्रभर ॥५॥

कर्मचारी पहचान सं०, 3217
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-4, मुम्बई
वर्ग- 'क'

विद्यालय का नाम : केंद्रीय कार्यालय, परमाणु उर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई

कर्मचारी पहचान संख्या: ३१४०

वर्ग : ख

'लॉकडाउन'

थम सा गया है सारा जीवन, सोचो कैसे समय बिताया है ?
कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।

गहराया संकट महामारी का, बचाना उससे जरुरी था ,
जान बचने के खातिर, लॉकडाउन लगाना जरुरी था ।
रुक सी गयी थी सबकी सासें, जान पर खतरों का साया है,
कोरोना की इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।

अपनो कों मिलने के खातिर, सिलसिला स्थानांतर का चल रहा था,
कारवाँ चल रहा रास्तों पर, बेबस गरीब पटरी पर कट रहा था ,
खून पसीने की कमाई को, नफाखोरों को लुटते आजमाया है,
कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।

धरे रह गहे मंदिर मस्जिद, बाबा, मौलवी काम न आए,
कितनोंको दम तोड़ते देखा, जो अस्पताल जगह न पाए।
सगे, संबंधी पास न आये, दोस्तों को दूरी बनाते पाया है
कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है,

रईसों के तो थाट चले थे, जो थे आलीशान मकानों में,
मशगूल हो गए थे रेसिपी और फेसबुक के चॉलेंजों में
झोपड़ीयों में गरोबों को, बिना निवाले दम तोड़ते पाया है
कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है,

कई दिनों बाद सारा परिवार एकसाथ में आया है,
एक-दूसरे के रहकर साथ, दिलों में सुकून जगाया है।
बढती पारिवारिक दूरियों कों कम करना हमें सिखाया है,
कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।

दो दिन जब हम कैद रहे, बंद रहकर चार दीवारों में,
दर्द उनका महसूस हुआ, जीनकों रखा है सलाखों में।
क्या होती है आजादी,इसका एहसास हमें कराया है,
कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।

हम बैठे है अपने घरों में, वे दिन-रात सफर पर चल रहे हैं,
पुलिस, डॉक्टर, नर्स, सिपाही,हमारी खातिर ही लड़ रहे हैं।
अलग नहीं है भगवान इनसे, यही हमको समझाया है,
कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।

****

(224)

वर्ग (ख)

Pages :4

Supplements No.

ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL -3 / JUNIOR COLLEGE, TARAPUR.

Name Miss Priya Pimpalkar Class/Sec.________ Roll No.________
PRT
Emp. Id. 3192
A.E.C.S.-3, Tarapur

Invigilator's Sign.

Start writing from here

II

तालाबंदी (लॉकडाउन)

बिन बुलाया मेहमान आया,
संग अपने महामारी लाया
सबका जीना दुभर कर गया
तालाबंदी है उपहार लाया।

बंद कर दिया कही आना-जाना
जितना मिले उतने में ही निभाना
लॉकडाउन का है ये जमाना
बाहर करोना व्हायरस है ना।

घड़ी के सुई से नज़र टली है
सुबह से कब ये शाम ढली है
चार दिवारी दुनिया मिली है
लॉकडाउन वाली यादे खिली है।

सैनितीजेर से हाथ धूल गए
मास्क लगाकर चेहरे भूल गए
किसीने भी न जानी रिश्तेदारी
सब भूल गए जिम्मेदारी।

ना किसी से मिलना, ना किसी को छुना
हे भगवान, इतने भी क्रोधीत मत होना!
ना पापा को ऑफिस, ना बच्चों को स्कूल
डर लगता है मुझे, लोग ना जाये भूल।

रोजी-रोटी से न कर सके दूरी,
बोरिया बिस्तर बाँध के अपना,
तलाश में फिर ये दुनिया चली
राह चले राही की, न जाने कितनी लाशे मिली।

ना मिली गाड़ी, ना मिली रेल
जिंदगी की दिनचर्या हो गई खेल
प्रकृती का देखो ये कैसा है खेल
क्या पता कब होगा, दोस्तों से हमारा मेल

मगर याद रखिए दोस्तों....

समझो ये अपनी मजबूरी
बनाई रखनी है सामाजिक दूरी
जल्दी होगी अपनी ख्वाहिश पूरी
दुनिया से मीट जाएगी यह महामारी।

ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL No. 3
TAPP. 3 & 4
COLONY
TARAPUR

निरीक्षक

हिन्दी पखवाड़ा - 2020.

मौलिक कविता लेखन 28/9/2020

अमला प्रदीप पंडित (खण्ड ख)
Emp. Id. 2038.
अणुशक्ति केन्द्रीय विद्यालय 6, मुंबई

तालाबन्दी

तालाबन्दी ऽऽ !! शब्द है निर्मम, भ्रम जगाता बन्धन का मन में ।
सोचा, क्या औचित्य है इसका, भारत जैसे जनतंत्र में ॥
कोविड का उत्पात रोकने, जब शासन ने की तालाबन्दी ।
थम गई जीवन की वल्गा, तड़पाने लगी स्थगित जिन्दगी ॥

वो बन्द दुकानें, वो सुनसान राहें, वो बेबस प्रवासी, ~~आ~~ घर जाने को तरसे ।
वो सूनी किताबें, वो मासूम खामोशी, वो बूढ़ी निगाहें, जो आदर को तरसे ॥
सन्नाटे का यह आलम कुछ नया-नया सा है ।
युवा जोश और होश भी कुछ, थमा थमा सा है ॥

रेलें भी ठप्प हैं, कारोबार भी ठप्प है, बेरोजगारी का साया गहराया ।
मन्दी ने तोड़ी कमर है जग की, महँगाई ने अपना परचम फहराया ॥
~~दमतोड़~~ दमतोड़ मेंह भुखमरी का यह एहसास कुछ नया-नया सा है ।
राजा से रंक बनने का यह सफर, कुछ गमजदा सा है ॥

आरामतलबी की ये चाहत, आज वनवास लगने लगी है ।
अपनों का साथ, वो चाय की चुस्की, कीमत हमको समझने लगी है ॥
ये वर्क फ्रॉम होम और ऑनलाइन क्लासेस का चलन नया नया सा है ।
वो उदास सहमा सा बचपन, जीवन कुछ थमा-थमा सा है ॥

जीवन एक क्षण भंगुर सत्य है, लॉकडाउन ने हमे सिखाया।
आत्मनिर्भर सादा जीवन, जो भूल गए थे, याद दिलाया॥
हर विपदा एक अवसर, एक आपदा एक चुनौती - यह सत्य आज
नया-नया सा है।
हे तालाबन्दी! तेरी वजह से, कोलाहल जीवन का थमा-थमा सा है।

अमला प्रदीप पंडित
2038
A.E.C.S. 6.
Mumbai

① DATE [ग]

हिंदी मौलिक कविता

9

प्रकृति

अरुणोदय में चिड़ियों की चहचहाहट, सुनहरी धूप की गर्माहट,
लहलहाती खेतो की हरियाली, जीवन की खुशहाली,
यह सारे वरदान, प्रकृति ने हमे की है प्रदान।

मनुष्य के सारे हुनर हुए विकसित गोद मे प्रकृति असीमित,
खान-पान, पालन-पोषण, ज्ञान-विज्ञान, सभी प्रकृति के उत्कर्ष,
लालच से मलीन हे मानव! तू हो गया कितना निष्कर्ष
जीवनदानी पंच भूतो की नीड़ प्रदूषित कर, तोडी विश्वास की रीड़
संस्कृति-संस्कारों को भूलकर, आमंत्रित की विनाश
अपने ही कर।

खो दिया ऐतिहासिक ज्ञान, गुलाम किया तुझे अपना विज्ञान,
जीव-जंतु का किया पतन, गिरवी रख दिया अपना वतन,
एहसास न था तुझे, आरंभ हो चुका तेरे विनाश का उद्घाटन,
बाढ़, भूकंप, तूफान और अकाल, महामारी इस वर्तमान काल,
न खून का रिश्ता न दोस्ती का, न अपना न पराया,
तालाबंदी और करोना ने सारी मानवता को हिलाया
राजा या प्रजा, रईस या प्रवासी, विचलित है प्रत्येक निवासी।

प्रकृति में क्रोध है तो करुणा भी है, देर है, पर अंधेर नहीं,
और न चीरो इसकी छाती को, न खुरेदो इसके ज़कमो को,
क्षमा कर दो इन अपराधियों को लौटा दो हमारी मुस्कानो को,
बच्चों के बचपन को, अमूल्य ज़िंदगी की स्वेच्छा को,
प्रकृति स्वीकृत करो, इस प्रार्थना को!

यह रचना स्वरचित
है। इससे पूर्व कहीं
प्रकाशित भी नहीं है।

— के. गीलता
पं.ऊ.के.वि-1
तारापुर
EMPID - 3009
वर्ग ['ग']

27/9/2020

क्र.प.स.- 2685

2nd

प्रकृति

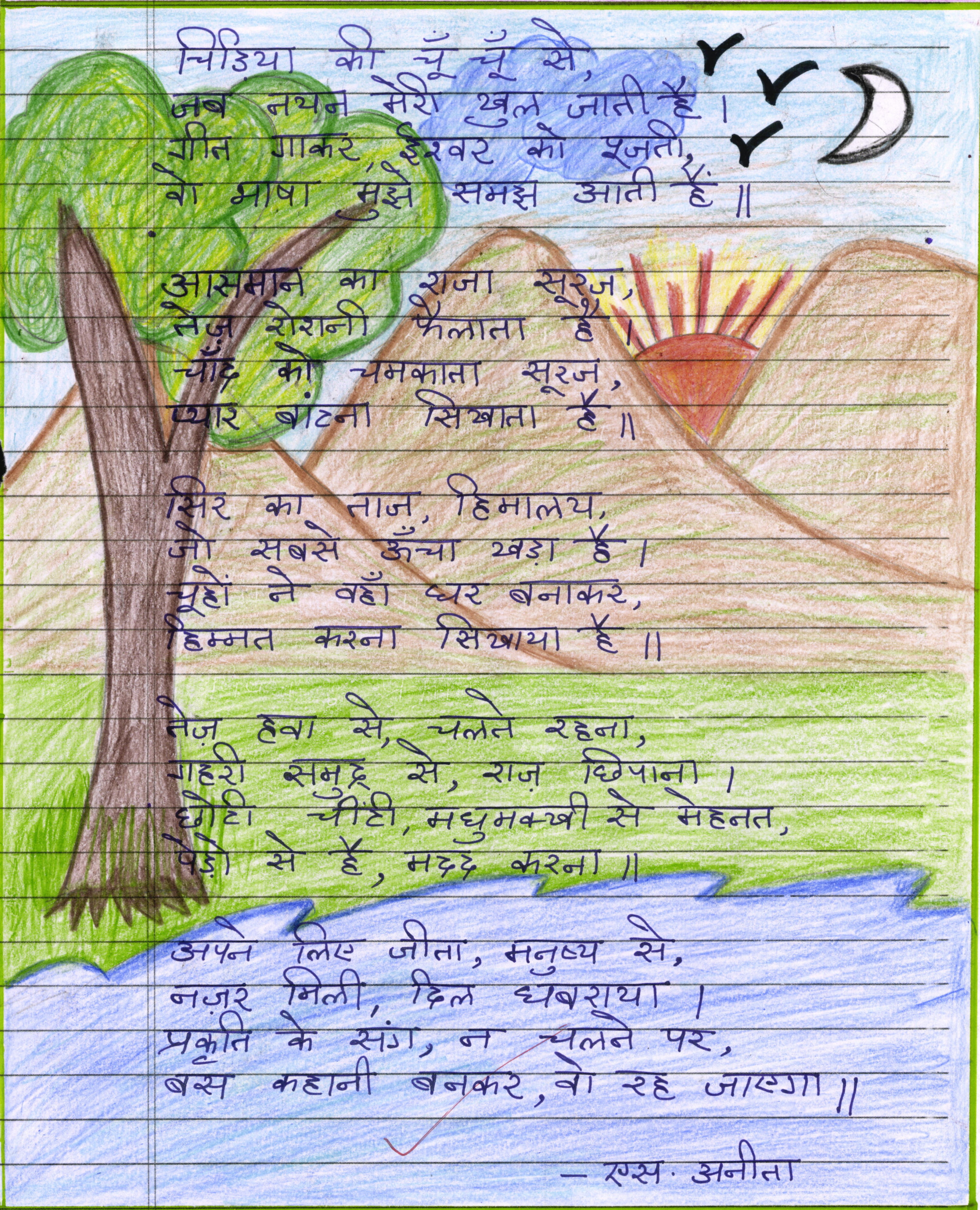

चिड़िया की चूँ चूँ से,
जब नयन मेरी खुल जाती है।
गीत गाकर, ईश्वर को पूजती,
वो भाषा मुझे समझ आती है॥

आसमान का राजा सूरज,
तेज़ रोशनी फैलाता है।
चाँद को चमकाता सूरज,
प्यार बांटना सिखाता है॥

सिर का ताज, हिमालय,
जो सबसे ऊँचा खड़ा है।
चूहों ने वहाँ घर बनाकर,
हिम्मत करना सिखाया है॥

तेज़ हवा से, चलते रहना,
गहरी समुद्र से, राज़ छिपाना।
छोटी चींटी, मधुमक्खी से मेहनत,
पेड़ों से है, मदद करना॥

अपने लिए जीता, मनुष्य से,
नज़र मिली, दिल घबराया।
प्रकृति के संग, न चलने पर,
बस कहानी बनकर, वो रह जाएगा॥

— एस. अनीता

ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL
Anuvijay Township
Tirunelveli (Dt.)
TN - 627 120.
* KKNPP *

उत्तम
Suman 28/9/20

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय
कुडनकुलम

निरीक्षक
Suman
28/9/20

टी. सी. प्रीति
Emp Id no - 2498
वर्ग 'ग'

28/09/2020

PRINCIPAL
ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL
ANUVIJAY TOWNSHIP
TIRUNELVELI (DIST)
TAMILNADU-627120

प्रकृति

अखंड तू, विराट तू
कितनी है विशाल तू।
सबके प्राणों का आधार
हे प्रकृति - जीवन की है मशाल तू।

रात, दिन, छाँव, धूप
कितने हैं तेरे ये रूप।
हर युग मे बनी
सत्य का प्रमाण तू।

कर्मों की ये श्रृंखला तुझसे है जुड़ी हुई।
तेरे गोद में खेलकर मानव प्रजाति बड़ी हुई।
संतुष्ट किया तुमने सबकी कामनाएँ
और निश्चल होकर सहा तुमने
काल की ये यातनाएँ।

इतना प्रहार मत कर
जगत के मूल बीज पर।
हे मानव - अपने जीवन के आधार पर
तू इतना वार मत कर।

रोष पे जो आ गई,
काँप उठेगी ये धरा।
ये जग भस्म हो जाएगा,
इसकी प्रकोप से तू डर ज़रा।

लाखों अपराध हैं किए तुमने,
निज हित खातिर सृष्टि का विध्वंस किया तुमने।
देख! आज तू है चारदिवारी में
लाचार सा पूरा, इस महामारी में।

सुन, कुछ कह रही है तेरी जननी तुझसे।
तू सुन ले क्या संकेत है।
ये महामारी 'कोरोना' नहीं,
ये तुम 'करो' 'ना' का संदेश है।

नमन कर इस सृष्टि का,
इस सुंदर, निर्मल प्रकृति का।
युग युगांतर से जो शोषित है
तेरी बहुभक्षक प्रवृत्ति का।

अखंड तू, विराट तू,
कितनी है विशाल तू,
किससे है तू बनी,?
है सबका सवाल तू।
सबके प्राणों का आधार,
हे प्रकृति - जीवन की है मशाल तू।